प्रवेशांक | जुलाई , 2025 |

त्रैमासिक ई - पत्रिका (हिन्दी)

गँव-गियँव

गंवई गंध गुलाब

निरक्षर मगर शिक्षित समाज के विमर्श की पत्रिका

प्रधान संपादक - विवेक रंजन सिंह

संपादक - अभय दुबे

गाँव-गिराँव

गंवई गंध गुलाब

त्रैमासिक ई - पत्रिका

हमारा उद्देश्य

गाँवों की पगडंडियों ने ही हमें बड़ी-बड़ी सड़कों और शहरों तक पहुँचाया। वह गांव जहाँ का बचपन खेत खलिहानों , कच्चे मकानों के ठंडे आँगन में बीतता है। जहाँ की शाम में धूल उड़ाती गायों के पीछे हम दौड़ा करते थे। जहाँ के बाग़, झूले , ताल - तलैया अब भी हमारी राह देखते हैं। जहाँ हम भाग दौड़ और उबाऊ जिंदगी से दूर सुकून की तलाश में जाते हैं। हमारा गाँव , हमेशा हमारा होता है , हम ही उससे दूर होते जा रहे हैं , न जाने क्यों (?) इस पत्रिका से हम हमारे गावों की ख़ूबसूरती जानेंगे और वहां के लोगों की प्यारी बातें और मीठी-मीठी कहानियां , जो कभी हम दादी और नानी की गोदी में सुना करते थे। हम उन्हीं यादों का एक पिटारा लेकर आ रहे है - “गाँव -गिराँव” त्रैमासिक ई - पत्रिका। आइये एक साथ मिलकर याद करें अपने गाँव गिराँव को ,जहाँ की गंवई गंध गुलाब के खुशबू जैसी है।

प्रवेशांक | जुलाई , 2025

gaongiranv@gmail.com

हमारा संपादन मंडल

विवेक रंजन सिंह
प्रधान संपादक

अभय दुबे
संपादक

उदय भाष्कर
सह - संपादक

राहुल कुमार
सह - संपादक

अंकिता पटेल
सह - संपादक

गाँव - जवार के विमर्श की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

अंक : प्रथम (प्रवेशांक), मई -जुलाई , २०२५

प्रकाशक : वर्धा डायरी (मासिक ई - पत्रिका) संपादन मंडल

संपादकीय संपर्क :

संपादक - वर्धा डायरी
राजगुरु छात्रावास, कक्ष संख्या - २८
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
पोस्ट - हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स,
वर्धा ४४२००१ (महाराष्ट्र)
ई - मेल : gaongiranv@gmail.com

आवरण चित्र : अभय दुबे
पृष्ठ सज्जा : विवेक रंजन सिंह , अभय दुबे
प्रारंभ वर्ष - जुलाई , २०२५

(प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली सामग्री अथवा रचनाओं के प्रकाशन हेतु संपादक का निर्णय ही मान्य होगा। प्रकाशित रचनाओं की रीति- नीति या विचारों से संबद्धों की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में प्रकाशक की पूर्ण जिम्मेदारी होगी।)
सर्वाधिकार सुरक्षित - संपादक / प्रकाशक

(पत्रिका पूर्ण रूप से अभी ई - पत्रिका है और इसके प्रिंट करने या उसके वितरण की इजाज़त अभी नहीं है। किसी विशेष स्थिति में प्रकाशक के अनुमति से ही इसके प्रिंट निकलवाए जा सकते हैं। यदि बिना प्रकाशक की अनुमति से कोई इसके प्रिंट को निकलवाता है और उसका वितरण करता है तो कानूनी कार्यवाई हेतु वह स्वयं इसका ज़िम्मेदार होगा। प्रेस व रजिस्ट्रेशन अधिनियम के अनुसार जब इसका आई.एस.एस.एन./आर.एन.आई. अंक प्राप्त हो जायेगा, तभी इसे प्रिंट माध्यम में वितरण किया जा सकता है। किसी भी आपत्ति या विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र वर्धा, महाराष्ट्र होगा।)

बिना प्रकाशक की अनुमति के किसी भी लेख अथवा सामग्री का प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन / प्रसारण प्रतिबंधित है।

आवरण चित्र - अभय दुबे
आवरण चित्र विवरण - बिहार के कैमूर जिले के अधौरा प्रखंड के पिपरा गाँव के एक घर की तस्वीर

शुभ - सन्देश

ममता कालिया
(वरिष्ठ साहित्यकार)

पत्रिका (गाँव - गिराँव) का नाम बहुत आत्मीय है। उम्मीद है सामग्री भी गांव समाज से जुड़ी हुई होगी। गांवों में जो परिवर्तन आ रहे हैं ,वे भी रेखांकित हों,ऐसी इच्छा है। प्रवेशांक के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं लें।

अजय ब्रह्मात्मज
(फिल्म समीक्षक)

शुभकामनाएं !
गांव-जवार की बातों में स्मृतिगंध होती है। गांव छोड़कर शहर आए हम सभी उन सालों को ही याद करते हैं, जब हम वहां थे। आज जो वहां रहते हैं, उनके नजरिए से गांव-जवार को देखना बेहतर होगा।

डॉ . अमरेन्द्र शर्मा
प्रोफ़ेसर
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय , वर्धा

इक्कीसवीं सदी में डिजिटिलाइज्ड होती दुनिया और कृत्रिम बुद्धि के बढ़ते शोर में गाँव को उसकी सम्पूर्ण देशजता के साथ याद रखना, याद करना न केवल कठिन होता जा रहा है बल्कि चुनौतीपूर्ण भी होता जा रहा है। डिजिटिलाइज्ड होते शोर के बीच गाँव-गिरांव की आवाज को याद करना , उसके दस्तावेजीकरण का उद्यम करना बेहद आवश्यक है। ऐसे में , महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के विचारशील विद्यार्थी विवेक रंजन और उसकी प्रबुद्ध टीम द्वारा 'गाँव-गिरांव' नाम से पत्रिका प्रस्तुत करना बेहद महत्त्वपूर्ण है। मैं इस पत्रिका के दीर्घजीवी होने की शुभकामनाएं देता हूँ।

डॉ. रेणु सिंह
सहायक प्रोफ़ेसर
जनसंचार विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय , वर्धा

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा गाँव- गिराँव पत्रिका का प्रकाशन एक अत्यंत सराहनीय प्रयास है। यह पत्रिका छात्रों को अपनी संस्कृति से जुड़ने तथा अपने गाँव की गतिविधियों एवं समस्याओं को उजागर करने के लिए एक पटल का कार्य कर रही है। वर्धा की धरती हमेशा से भारतीय चिंतन परंपरा के साथ साथ समुचित विकास को बढ़ावा देती आई है। यह पत्रिका ग्रामीण जीवन, ग्राम्य विमर्श, लोक संस्कृति, लोक परंपराओ एवं लोक कलाओं का प्रतिबिंब है। प्रवेशांक के लिए मेरी शुभकामनाएं और पत्रिका से जुड़े छात्र-छात्राओं को बहुत बहुत बधाई।

पं. श्यामसुंदर दुबे
लोकविद

भारत का जो हृदय गांव में धड़कता था वह गांव अब कोमा में चले गए हैं इसलिए वहां भारत की धड़कन खोजना असंभव है वहां भी वह सब कुछ हो रहा है जो वहां नहीं होना चाहिए था आप गांव की आत्मा की खोज इस पत्रिका के माध्यम से करें और गांव को एक जीवंत इकाई की तरह शब्दों में व्यक्त करें ताकि हम अपने लोक को एक नए आलोक से परिभाषित कर सकें और उसका उजेला दूर-दूर तक भेज सकें यह शब्द की ताकत पर निर्भर है। मैं उम्मीद करता हूं कि आपकी पत्रिका के शब्द ज्योतिर्मय होंगे मेरी मंगल कामनाएं।

डॉ. धनंजय चोपड़ा
वरिष्ठ पत्रकार और लेखक

नित नई टेक्नोलॉजी के बलबूते बदलती दुनिया और बदलते समाज में अगर कुछ जरूरी करने को बचा है तो वह यह कि हम अपनी सृजनात्मक थाती को बचाएं। हम अपने उस 'लोक' को बचाएं, जिसको आधार में रखकर हम विकास के नए-नए आयाम अपने पीछे आ रही पीढ़ियों को सौंपते आए हैं। जाहिर है ऐसे में जब युवाओं की ओर से यह सूचना मिले कि वे अपनी इसी थाती को सहेजने के लिए एक सार्थक पहल करने जा रहे हैं तो मन बाग-बाग हो उठता है। ऐसा ही कुछ अनुभव हुआ जब युवा पत्रकार और लोककलाधर्मी विवेक रंजन सिंह ने सूचित किया कि वे 'गांव गिरांव' नामक त्रैमासिक डिजिटल पत्रिका का प्रकाशन शुरू करने जा रहे हैं। वास्तव में हमारे अपने गांव भरी-पुरी संस्कृति के संवाहक होते हैं। हमारे अपने सामाजिक-सांस्कृतिक आस-विश्वास के प्रति जन-सरोकार और दुरूहताओं एवं विद्रूपताओं के विरुद्ध जन-जागरूकता की ढेर सारी धाराएं हमारे इन्हीं गांवों में बहा करती हैं। इनमें शामिल होकर ही हम अबतक अपने को बचाने में सफल होते आए हैं। मेरी इच्छा है कि गांव-गिरांव पत्रिका इसी मुहिम का हिस्सा बने और निरंतर विस्तार लेती रहे। गांव-गिरांव की पूरी टीम को ढेर सारी शुभकामनाएं...

डॉ. गीता शाहू
सहायक प्रोफ़ेसर
जनसंचार विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय , वर्धा

मुझे खुशी है कि पत्रकारिता के छात्र पढ़ाई के साथ साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में नव प्रयोग कर रहे हैं। गाँव - गिराँव डिजिटल पत्रिका के सभी संपादन मंडल को मेरी शुभकामनाएं। आप पत्रिका के माध्यम से ग्रामीण विमर्श को रेखांकित करने तथा आधुनिक समाज में उन विमर्शों के सकारात्मक पक्षों को जीवंत करने के प्रयास में सफल बनें, मेरी यही कामना है।

शुभ - सन्देश

सुधी विद्वान विवेक रंजन सिंह के प्रधान संपादकत्त्व में 'गाँव–गिराँव', त्रैमासिकी पत्रिका का प्रवेशांक प्रकाशित होने जा रहा है, जिसके सम्पादक श्री अभय दुबे हैं। मेरे लिये यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि मनुष्यता और जीवन की धुरी रहने वाले गाँवो को लेकर एक विमर्शमूलक वातावरण बनाने के प्रयास हेतु पत्रिका संकल्पबद्ध है, जो अत्यन्त प्रसन्नता और स्वागतयोग्य बात है।

मैं श्री विवेक रंजन सिंह समेत 'गाँव–गिराँव' की पूरी मण्डली को बधाई देता हूँ और इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा मार्गदर्शी चिन्तन के अभियान हेतु अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

सुधी विद्वानों, बुजुर्गों, अध्येताओं, शोधार्थियों, गाँव–जवाँर के जीवन को समझने वाली विचारधाराओं से विनम्र अपील है कि इस सारस्वत अनुष्ठान को महत्त्वपूर्ण और सार्थक बनाने में अपना योगदान करें।

सादर,

यतीन्द्र मिश्र
27 जुलाई, 2025
राजसदन, अयोध्या

गाँव-गिराँव

गंवई गंध गुलाब

त्रैमासिक ई - पत्रिका

अनुक्रमणिका

1. **अपनी बात** / गांव वाली छांव / विवेक रंजन सिंह / **7**
2. **संपादकीय** / गांवों का नाश केवल भौतिक नहीं बल्कि आत्मिक विनाश / अभय दुबे / **9**
3. **साक्षात्कार** / गांव की सहजता ने बहुत कुछ सिखाया / अशोक पाठक / **11**
4. **कहानी** / मंतर / गोविंद कुमार / **13**
5. **मोरा गांव** / गांव की मिट्टी में जादू है / आयुषी उपाध्याय / **15**
6. **कविता** / फ़कीर / राम नारायण रमण / **16**
7. **कविता** / गांव मेरा / वीरेंद्र नारायण झा / **17**
8. **कविता** / भरत प्रसाद की कविताएं / **18**
9. **ग्राम्य - जीवन** / डॉ. नरेंद्र दिवाकर / **21**
10. **विचार** / आखिर क्यों मैथिली ब्राह्मण अपने नाम के साथ लगाते हैं 'खां' / हर्ष आनंद / **24**
11. **विचार** / गांव : सादगी, संघर्ष और आत्म का निवास / कुलदीप समदर्शी / **26**
12. **यात्रा - वृतांत** / दातुन / राहुल कुमार / **27**
13. **कहानी** / आख़िरी बलिदान / प्रियांशु / **29** । मेरा रहस्मयी गांव / अमन कुमार / **30**
14. **मोरा - गांव** / मेरे गांव की गलियों ने आल्हा और कजरी की बोल सुनाई / शुभम कुमार / **32**
15. **दुआर - मोहर** / घर-गृहस्थी / **34**
16. **माटी के बोल** / बाईस-कोप / **38**
17. **खेत खलिहान** / अन्न में मड़ुआ और रिश्तेदार में सढ़ूवा / राज मोहन / **39**
18. **तीज - त्यौहार** / करमा: जब देवता बन जाते हैं जंगल के पेड़ / सुनील कुमार दास / **40**
19. **चिंता फिकिर** / गांवों की वर्तमान स्थिति / अनुपम द्विवेदी /**41**
20. **ग्राम्य विमर्श** / डूबता उभरता गाँव / प्रतिभा मिश्रा / **42**

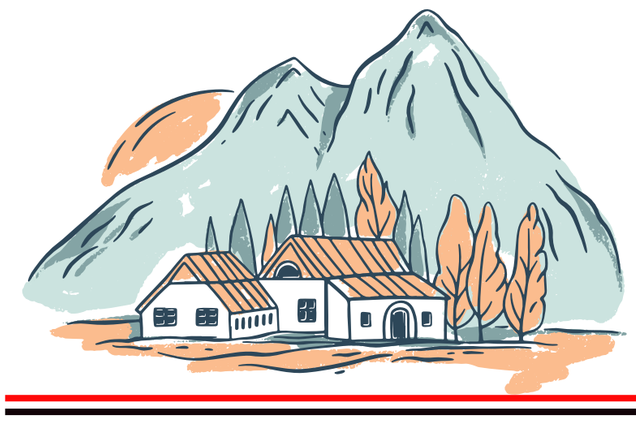

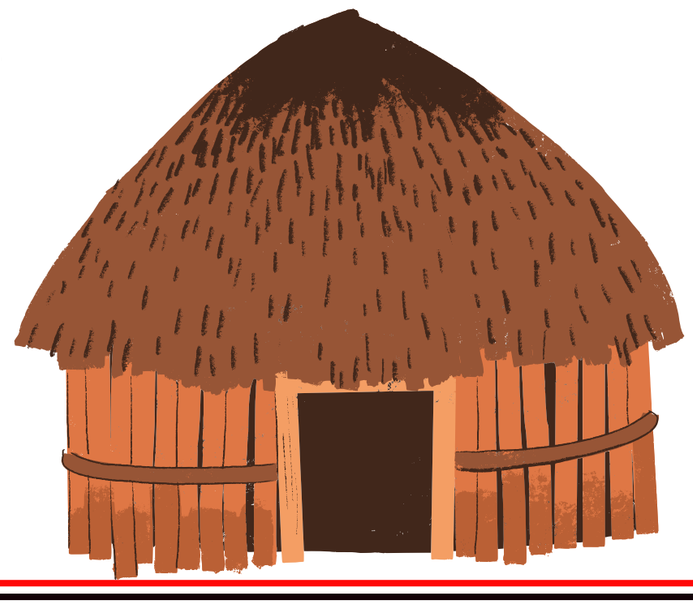

gaongiranv@gmail.com